Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ-5 'महाभारत की एक साँझ' (एकांकी)
लेखक - भारत भूषण अग्रवाल

एकांकी का शेष भाग (78, 79, 80 एवं 81)

युधिष्ठिर ने जब यह कहा कि मैंने हमेशा न्याय की बात की है। इसलिए सभी आदरणीय गुरुजनों ने युधिष्ठिर का पक्ष लिया है। उनके अनुसार दुर्योधन व्यर्थ ही उन पर कायरता का आरोप लगा रहा है। दुर्योधन की दृष्टि में युधिष्ठिर महत्त्वाकांक्षी था। राज्य पाने की लालसा ने उसे इतना स्वार्थी बना दिया था कि उसे दुर्योधन की समझ और सोच के अनुसार जो उचित था, वह भी समझ में नहीं आ रहा था। उसके अनुसार न्याय मेरे पक्ष में था तभी तो धार्मिक और न्यायी लोग पितामह भीष्म, गुरु द्रोण, कृपाचार्य और गुरु द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा थे, जिन्होंने दुर्योधन के पक्ष में युद्ध किया था। दुर्योधन ने युधिष्ठिर के सामने यह स्पष्ट कर दिया कि न्याय वास्तव में उसी की ओर था तभी तो इन आदरणीय लोगों ने उसका साथ दिया और युद्ध के लिए अपनी सेना देकर मेरी सहायता की। युधिष्ठिर दुर्योधन से फिर यह समझाने का प्रयास करता है कि तुम मेरी बात का विश्वास करो, मैं तुम्हारे दर्द को बाँटने आया था। रक्त को बहाने की मेरी इच्छा कदापि नहीं थी। दुर्योधन कहता है कि तुम्हारे कह देने से मैं विश्वास नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि तुम रक्त की होली खेलना चाहते थे। तुम

अपनी बातों से मुझे बहका नहीं सकते।

दुर्योधन ने युधिष्ठिर से कहा कि बचपन से ही हम दोनों ने साथ-साथ शिक्षा पाई परन्तु तभी से तुम्हारे मन में कपट था। पुरोचन को कपट से मारकर तुम पंचाल गए और द्रुपद को अपनी ओर मिला लिया तभी तो तुम्हारा बढ़ता बल देखकर मेरे पिता ने तुम्हें आधा राज्य दे दिया था। लेकिन तब भी तुम लोग चैन से न बैठे। अर्जुन को दिग्विजय के लिए चारों ओर भेजा। राजसूय यज्ञ के बहाने जरासंध और शिशुपाल का वध किया। यहाँ तक कि जुआ खेलते समय भी अपना आधा राज्य यही सोचकर दाँव पर लगा दिया कि यदि तुम्हारी जीत हो तो मेरा आधा राज्य भी बिना प्रयास के मिल जाए।

दुर्योधन, युधिष्ठिर से वह सत्य को ढकने का प्रयास न करने के लिए कह रहा है, जिसके अनुसार हस्तिनापुर के साम्राज्य पर युधिष्ठिर और पाण्डवों का कोई अधिकार नहीं बनता है। दुर्योधन उन प्रमाणों को सत्य मान रहा है, जो उसके लालच और हठधर्मिता का प्रमाण है। द्रौपदी के अपमान के संबंध में दुर्योधन ने युधिष्ठिर से कहा कि द्रौपदी ने भी भरी सभा में मेरा अपमान किया था। उस समय क्या तुम्हारी न्याय भावना सो रही थी? फिर द्रौपदी को जुए में दाव पर लगाकर क्या तुमने उसका सम्मान किया था? जिस समय द्रौपदी सभा में आई, उस समय वह जुए में जीती हुई दासी थी।

दुर्योधन के अनुसार यह युधिष्ठिर का विचार था कि खेल में जीत जाएँगे और खेल की शर्त के अनुसार जीतने पर उन्हें पूरा राज्य मिल जाएगा। मगर दुर्भाग्यवश युधिष्ठिर के भाग्य ने उसका साथ न दिया और वह शर्त हार गया। खेल में शर्त रखी गई थी कि जो खेल हारेगा वह तेरह वर्ष तक वन में जाकर रहेगा। अतः युधिष्ठिर हार गया और उन्हें तेरह वर्ष जंगल में रहना पड़ा। दुर्योधन के

अनुसार इसका ज़िम्मेदार युधिष्ठिर स्वयं ही है। पांडवों ने वनवास का एक एक पल युद्ध की तैयारी में लगाया। अर्जुन ने तपस्या करके नए-नए शस्त्र प्राप्त किए। विराट राज (श्रीकृष्ण) से मैत्री करके नए-नए संबंध बनाए और अवधि समाप्त होते ही अभिमन्यु के विवाह के बहाने मित्र राजाओं को निमन्त्रण देकर एकत्रित किया और अपनी शक्ति को बढ़ाया।

युधिष्ठिर दुर्योधन को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि तुमने हर घटना का उल्टा अर्थ लगाया है। जो सत्य नहीं है अर्थात् मिथ्या है। अपने तर्क में दुर्योधन ने कहा कि अंतर्यामी जानते हैं कि मैंने कोई बुरा आचरण नहीं करना चाहा। जब तक पांडवों ने कोई आक्रमण नहीं किया, मैं चुप रहा जब मैंने देखा कि युद्ध करना आवश्यक है तो फिर विवश होकर मुझे वीरोचित कर्तव्य करना पड़ा। युधिष्ठिर ने दुर्योधन से प्रश्न किया कि क्या अभिमन्यु वध जो निर्दयतापूर्वक एवं अन्यायपूर्वक किया गया था, क्या वह वध वीरोचित था। तब दुर्योधन कहता है कि क्या भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण आदि का वध वीरोचित था यदि हाँ तो अभिमन्यु का वध भी वीरोचित ही था। आज भीम ने मुझे जिस तरह पराजित किया क्या वह वीरोचित कहलाएगा? क्योंकि जब भीम और दुर्योधन में युद्ध हो रहा था तब ऐसा प्रतीत हो रहा था कि इस युद्ध में दुर्योधन की ही जीत होगी। तभी श्रीकृष्ण ने भीमसेन की जंघा पर प्रहार करने का संकेत दिया। दुर्योधन ने महाभारत के युद्ध का सबसे बड़ा कारण युधिष्ठिर की महत्त्वाकांक्षा को बताया। उसके अनुसार मैं तो एक निस्सहाय, विवश व्यक्ति की भाँति केवल अपने कर्तव्य का पालन कर रहा था।

युधिष्ठिर ने दुर्योधन को बताया कि तुम सत्य और मिथ्या का भेद करने में असमर्थ हो। दुर्योधन ने कहा

मैंने अपना सारा जीवन तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा की टकराहट से बचने में लगाया लेकिन सारे प्रयास असफल रहे। अब मेरे जीवन की अंतिम साँझ हो रही है। तुम जाकर अपनी इच्छाओं को पूरी होते देखो। जाकर अपने गुरुजनों और बंधु-बांधवों के खून से अभिषेक करके राज सिंहासन पर बैठो। मैं तुम्हारे रास्ते से हट गया हूँ।

दुर्योधन युधिष्ठिर को बताता है कि तुम यदि सोच रहे हो कि मुझे अंतिम समय में पश्चाताप हो रहा है तो मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ कि मेरे मन में कोई पश्चाताप नहीं है केवल एक दुःख है और यही दुःख मेरे साथ जाएगा कि मेरे पिता अंधे क्यों हुए अर्थात् यदि मेरे पिता अंधे न होते तो उसे यूँ न मरना पड़ता। वह हस्तिनापुर का राजा होता और उसे पांडवों से किसी तरह का भय न रहता। इस प्रकार दुर्योधन के इस कथन से प्राणों का अंत हो जाता है। दुर्योधन के मरते ही महाभारत का युद्ध भी समाप्त हो जाता है।

छात्रों! आज हमारी यह एकांकी पूर्ण हो चुकी है। सभी छात्र इस एकांकी को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे व समझेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

"जिस कालाग्नि को तूने वर्षों घृत ...... बिना शांत न होगा।"

(पाठ्यपुस्तक पृष्ठ सं० 71)

(क) 'कालाग्नि' शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में हुआ है और क्यों?

(ख) 'घृत' शब्द का प्रयोग किसलिए किया गया है? किसके साथी कब और क्यों स्वाहा हो गए?

(ग) वक्ता कौन है? उनका परिचय दीजिए।

(घ) 'तेरी आहुति लिए बिना शांत न होगा' – इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]